RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.03 | March 2022 | pp. 79-87
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Swadeshi versus Globalization: Gandhian Vision

स्वदेशी बनाम भूमण्डलीकरण : गाँधीय विचार दृष्टि

*Dr. Jitendra Kumar Soni

Mission Director, NHM, Rajasthan

Abstract

Globalization is an extension of liberal ideology. Although the formal colonial system is gone, Western domination and control continues to influence the vast majority of the non-Western world in a way that is more subtle and sophisticated but more destructive. Globalization is not a simple but complex process which operates at different levels of political, economic, cultural and ideologies. It has created worldwide social, economic and cultural insecurity.

Globalization seeks to impose a narrow local interest as 'global' all over the place. Violence is natural in this process, local groups, their interests, their identity, their security may be at risk. This cannot be globalization. Gandhian descent of globalization where local diverse cultures are promoted and all together lay the foundation of a global village. It will not be violence, but development will be based on the foundation of non-violence. Socio-economic justice from human non-violence and non-violence of other living beings will strengthen environmental health. Here all the local units will work self-disciplined with love, non-violence and harmony. Will be devoted to the service of a greater whole i.e. humanity.

Therefore, according to the research of the present paper, today's need is to adopt positive, inclusive, liberal Swadeshi so that confidence in our people and knowledge system, in our abilities and our skills is built.

Keywords: *Globalization and India, Alternatives to Globalization: Swadeshi and Gandhian values of life, Swadeshi vs. Globalization*

Abstract in Hindi

भूमण्डलीकरण उदारवादी विचारधारा का विस्तार है। हालांकि औपचारिक औपनिवेशिक व्यवस्था समाप्त हो गई है, फिर भी पश्चिमी प्रभुत्व और नियन्त्रण का गैर–पश्चिम के विश्व के विशाल बहुमत पर इस तरीके से प्रभाव जारी हैं, जो कि अधिक सूक्ष्म एवं परिष्कृत किन्तु अधिक विनाशवादी है। भूमण्डलीकरण एक सरल नहीं बल्कि जटिल प्रक्रिया है जो विभिन्न स्तरों की राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं विचाराधाराओं को परिचालित करती है। इसने विश्व्यापी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असुरक्षा पैदा की है।

भूमण्डलीकरण एक संकीर्ण स्थानीय हित को 'वैश्विक' बताकर सम्पूर्ण जगह पर थोपना चाहता है। इस प्रक्रिया में हिंसा होनी स्वाभाविक है, स्थानीय समूह, उनके हित, उनकी पहचान, उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। यह भूमण्डलीकरण नहीं हो सकता है। भूमण्डलीकरण का गाँधीय अवतरण जहाँ स्थानीय विविध संस्कृतियों का संवर्धन हो और सभी मिलकर वैश्विक गाँव की नीवं रखें। यह हिंसा नहीं, अहिंसा की आधारशिला पर विकास होगा। मानवीय अहिंसा से सामाजिक–आर्थिक न्याय एवं अन्य जीवों की अहिंसा से पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बल मिलेगा। यहाँ सभी स्थानीय इकाइयाँ प्रेम, अहिंसा एवं सौहार्द से आत्म अनुसाशित रूप से काम करेंगी। एक वृहद समग्र अर्थात् मानवता की सेवा में समर्पित हो जाएंगी।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र के शोधानुसार आज की आवश्यकता है कि सकारात्मक, समावेशी, उदार स्वदेशी को अपनाया जाए ताकि हमारे लोगों व ज्ञान–तंत्र में, हमारी योग्यताओं एवं हमारे कौशल में विश्वास निर्मित हो।

Keywords: *भूमण्डलीकरण एवं भारत, भूमण्डलीकरण का विकल्प : स्वदेशी और गाँधीवादी जीवन मूल्य, स्वदेशी बनाम भूमण्डलीकरण*

Article Publication

Published Online: 23-Mar-2022

***Author's Correspondence**

Dr. Jitendra Kumar Soni

Mission Director, NHM, Rajasthan

jksoniias@gmail.com

10.31305/rrijm.2022.v07.i03.014

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

समसामयिक जीनव में भूमण्डलीकरण एक बेहद ताकतवर परिघटना है जिसके अन्तर्गत समूचे विश्व को 'ग्लोबल विलेज' बनाये जाने की परिकल्पना की गई है। सूचना, संचार, यातायात, बैंकिंग, व्यापार, कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, पूँजी एवं श्रम प्रवाह आदि क्षेत्रों में राष्ट्रों के मध्य परस्पर दूरियाँ कम होती जा रही है। राष्ट्रों की राजनीतिक एवं सामाजिक सीमाएँ समाप्त किये जाने की उम्मीद की जा रही है। कुल मिलाकर कहा जाये तो 21वीं सदी भूमण्डलीकरण की है।

भूमण्डलीकरण को कई प्रकारों से जाना जाता है जैसे– जगतीकरण, विश्वायन, वैश्वीकरण, ग्लोबीकरण इत्यादि। यह परिघटना इतनी व्यापक है कि जीवन का प्रत्येक आयाम आर्थिक, सांस्कृतिक सामाजिक एवं राजनैतिक इत्यादि इससे प्रभावित नजर आता है। अतः भूखण्डलीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है।

भूमण्डलीकरण के प्रमुख अर्थ सें आशय एक विश्व अर्थतंत्र तथा वैश्विक बाजार से है जिसमें प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्यतः जुड़ना ही होगा चाहे उनके राष्ट्र जनमत में हो या नहीं। अन्य शब्दों में, यह उदारीकरण एवं निजीकरण का गठजोड़ है। उदारीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विभिन्न देशों के बाजार पूंजी, तकनीक, एवं श्रम के अबाध प्रवाह को प्रोत्साहन देकर व्यापार के अवरोधों को कम से कम करने का प्रयास करते हैं जिससे व्यापार में गत्यात्मकता आये एवं अन्तनिर्भरता बढ़े। विश्व में इस कारण से अधिकाशं देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक एकीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के नियामक के रूप में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद गैट नामक संस्था की स्थापना की गई थी जिसका स्थान अब विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने ले लिया है।

वास्तव में, विश्व व्यापार संगठन पश्चिम के विकसित देशों द्वारा निर्मित सोने का जाल है जिसमें विकास के नाम पर गरीब विकासशील देशों को फंसाकर उनका शोषण किया जाता है। इसमें मुक्त व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, संरक्षण के उपबन्धों, तकनीक हस्तान्तरण आदि हथकंडों द्वारा विकसित देशों द्वारा अपने साम्राज्यवादी मंसूबों को पूरा किया जाता है। आधुनिक समय में इसे नवउपनिवेशवाद कहा जाता है। अर्थात् पूरानी पूँजीवादी उपनिवेशीय शक्तियों की वर्तमान काल में नये रूप में पुनः उपनिवेशीयकरण की प्रक्रिया। यह वह मार्ग है जिस पर चलकर गरीब राष्ट्र अपने पांव खो बैठेंगे और इस मार्ग का अन्त पराधीनता की अंधेरी कोठरी में जाकर होगा।

वस्तुतः उपनिवेशवाद का स्त्रोत भूमण्डलीकरण कोई नई परिघटना नहीं है। आज के भूमण्डलीकरण की तरह ही उन्नीसवीं सदी में शुरू हुई इस परिघटना में भी महाशक्ति के रूप में ब्रिटेन मौजुद था, एक महामुद्रा के रूप में पाउण्ड था और रेलवे, बेतार के तार और पानी के जहाज के रूप में उस जमाने की संचार और परिवहन क्रांति पूरे भूमण्डल के फासलों को कम करने में लगी थी परन्तु आधुनिक भूमण्डलीकरण के केन्द्र में औपचारिक रूप से ब्रिटेन की जगह अमेरिका, पाउण्ड की जगह डॉलर एवं संचार के परम्परागत साधनों की जगह इन्टरनेट, कम्प्यूटर आदि आ गए है।

भूमण्डलीकरण को साररूप में परिभाषित करने का प्रयास शिव विश्वनाथन ने इस प्रकार किया है[1]–

''भूमण्डलीकरण एक ऐसी पश्चिम–केन्द्रीयता का नाम है जो यू.एस. को यूनिवर्सल या सार्वभौम का पर्याय मानकर चलती है। इसमें विज्ञापन और कामनाओं का सौंदर्यमूलक संसार रचकर, जो चेतना के ऊपर हावी हो जाता है और बाजार के जरिये हर चीज की कीमत तय करके उसे मुनाफे का स्त्रोत बना देता है। इस तरीके से सांस्कृतिक और अर्थतंत्र के बीच भूमण्डलीकरण का फैलाव अभंग जाल की तरह काम करता है। इस संस्कृति का फैलाव केवल नृत्य एवं संगीत के जरिये ही नहीं बल्कि गैट, यूएनडीपी और डब्ल्यूटीओ जैसी एजेंसियों के नीरस नेटवर्क के जरिये हो रहा है।''

इससे स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक तौर पर भूमण्डलीकरण एक ऐसी सभ्यतामूलक एकता का नाम बन कर उभरा जिसके मर्म में पश्चिमी सभ्यता से उपजे प्रतिमान थे, रहन–सहन और खान–पान की कसौटी भी पश्चिमी थी और पहनावे का मानक भी पश्चिमी था। इस प्रकार, भूमण्डलीकरण को केवल आर्थिक चश्में से नहीं देखा जा सकता। इसे सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर भी देखा जा सकता है।

एथंनी गिड्डिंस ने अपनी रचना ''कांसीक्वेंसिज ऑव मॉडर्निटी'' में भूमण्डलीकरण को सामाजिक तौर पर परिभाषित करते हुए कहा है[2]:–

''भूमण्डलीकरण को सामाजिक संबंधों के विश्वव्यापी सघनीकरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो दूर–दूर तक स्थानीयताओं को आपस में जोड़ देता है। यह सूत्र कुछ इस तरह से काम करता है कि स्थानीयताओं के दायरे में होने वाली घटनाओं की शक्ल–सूरत उनसे बहुत दूर चल रहे घटनाक्रम के आधार पर बनती है और ऐसा ही असर स्थानीयताओं का घटनाक्रम स्वयं को प्रभावित कर रही सूदुर घटनाओं पर डालता है।''

गिड्डिंस की इस आकर्षक और साफ सुथरी परिभाषा का तात्पर्य यही है कि भूमण्डलीकरण ने पश्चिमी केन्द्रीकरण के तहत स्थानीय एवं विश्व के संबंधों के भूगोल को बदल डाला है तथा स्थानीय समाज को वैश्विक समाज से जोड़ने का कार्य किया है। कोका कोला, मैकडोनाल्ड, हॉलीवुड, सिनेमा विश्व के सभी देशों में उपलब्ध है जो कि इन देशों के समाज एवं संस्कृति को प्रभावित करते हैं। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप जैसे–जैसे संस्कृति वैश्विक बनती जा रही है वैसे–वैसे स्थानीय पक्ष कमजोर बनता जा रहा है। ग्रामीण जनसंख्या बड़े शहरों की तरफ रूख कर रही है। केबल एवं सेटेलाइट जैसे प्रसारण तंत्रों, जिन पर पश्चिम के चैनल्स का अधिकार है, पश्चिमी संस्कृति को थोपने का कार्य कर रहे हैं।

इस प्रकार भूमण्डलीकरण एक ऐसी निरंतर प्रक्रिया है जिसके तहत क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति का समन्वय विनिमय के वैश्विक नेटवर्क से हो गया है। इसका सबसे बड़ा आधार बहुराष्ट्रीय निगम एवं संचार प्रौद्योगिकी है।

भूमण्डलीकरण एवं भारत

पश्चिमीकरण की प्रक्रिया के रूप में भूमण्डलीकरण की पदचाप सत्तर के दशक में भारत में भी सुनाई दी जाने लगी जब भारत ने अपनी विदेश नीति में अमेरिका का अनुसरण करना शुरू किया। तत्पश्चात् नब्बे के दशक में उत्पन्न विदेशी मुद्रा संकट ने जिन आर्थिक सुधारों को जन्म दिया था। (विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के सुझावों पर आधारित ढ़ाँचागत समायोजन कार्यक्रम), उन्होंने भारत में भूमंडलीकरण की जमीन को पक्का करने का ही काम किया। आर्थिक सुधारों हेतु अपनाई गई नई आर्थिक नीति के तहत ही भारत विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय निगमों का आगमन हुआ। किन्तु भारत के भूमण्डलीकरण की यह कहानी अधूरी रह जायेगी अगर भूमण्डलीकरण से भारत पर पड़ने वाले प्रभावों पर प्रकाश न डाला जाए। यद्यपि आर्थिक सुधारों हेतु अपनाई गई भूमण्डलीकरण के मूल में भारतीयों के जीवन की गुणवत्ता में तीव्र व स्थायी सुधार लाना था ताकि देश में व्याप्त गरीबी, शोषण, बेरोजगारी इत्यादि सामाजिक–आर्थिक समस्याओं से निजात दिलाई जा सके परन्तु यथार्थ में परिणाम पर्याप्तरूप से संतोषजनक नहीं मिले जितनी उम्मीद की गई थी।

नब्बे के दशक में दनादन भारत पहुंचने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों, आधुनिक तकनीकों और नव उपनिवेशवादी नीतियों ने बड़े पैमाने पर घरेलू और लघु उद्योगों का नाश किया है। इसमें ग्रामीण आबादी का बड़ा हिस्सा बेरोजगार हो गया है और रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ पलायन कर रहा है। इसी भूमण्डलीकरण से किसान भी बच नहीं पाये हैं। बीजों, खाद, कीटनाशक दवा, कृषिगत उपकरणों पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एकाधिकार ने इनकों भारतीय किसानों को महंगें दामों पर खरीदने को मजबूर किया है जिसके लिए उन्हें ऋण लेना पड़ता है। किसानों की ऋणग्रस्तता ने भारत के कई प्रदेशों में किसानों द्वारा आत्महत्या करने का दौर शुरू कराया है जो उनकी परेशानियों की पराकाष्ठा को इंगित करता है।

इसी के साथ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर भी अधिकार कर रही है। उदाहरण के रूप में, भोपाल का खौफनाक जनसंहार यूनियन कार्बाइड कंपनी की अनैतिक एवं अवैज्ञानिक सोच के कारण पैदा हुई है। इस प्रकार की तकनीक एवं गैस निर्माण के लिये अमरीका में बिल्कुल छूट नहीं है लेकिन भारत तो उपनिवेश एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का चारागाह है। हमारी कृषि के परम्परागत ढाँचे को इन वैज्ञानिक कम्पनियों ने वैज्ञानिक विकास के नाम पर नष्ट कर दिया है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रभाव से केवल जमीन ही नहीं आबोहवा और पशु तथा मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर खतरे बढ़े हैं। पर्यावरण में भी असंतुलन आया है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां आर्थिक क्षेत्र में ही भारत को नुकसान नहीं पहुंचा रही अपितु सांस्कृतिक मोर्चे पर भी प्रभावित कर रही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा भारत में एक नयी उपभोक्ता संस्कृति को प्रचलित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत भारतीय उपभोक्ता को केन्द्र में रखा जा रहा है। इसके माध्यम से खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा, आचार–विचार, इत्यादि को पश्चिम के अनुरूप ढ़ालने का प्रयास किया जा रहा है एवं जिसे भूमण्डलीय संस्कृति के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। इन कंपनियों द्वारा भारत में अंकल चिप्स, पेप्सी, एवं पिज्जा का बड़े पैमाने पर विज्ञापनों द्वारा प्रचार कर भारतीय युवा वर्ग को इनका आदि बनाया जा रहा है। वैश्विक टी.वी. गेम्स शो जैसे कौन बनेगा करोड़पति, सच का सामना एवं बिग बॉस जैसे रियलीटी शो भी पाश्चात्य टीवी गैम्स शो से प्रेरित है। जिनके द्वारा बिना मेहनत के अरबपति बनने के सपने दिखाकर युवाओं को अकर्मण्यता की ओर घकेला जाता है। वहीं बिग बोस जैसे कार्यक्रमों द्वारा भारतीय संस्कृति को दूषित किया जा रहा है। परम्परागत भारतीय खेलों की जगह क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ाई जा रही है एवं इसके प्रचार द्वारा कंपनियां अपने उत्पादों की बिक्री करती है। फेसबुक, ऑरकूट ट्वीटर जैसी साइटों के वैश्विक प्रचार द्वारा यद्यपि ये तर्क दिया जाता है कि इनके द्वारा वैश्विक दूरियों को कम किया जा रहा है। परन्तु यथार्थ में धीरे–धीरे व्यक्ति इनका आदि होकर अपने परिवार, मित्रों एवं सगे सम्बन्धियों से भी कट जाता है।

इस प्रकार आर्थिक विकास के नाम पर अपनाई जा रही भूमण्डलीकरण व्यवस्था के केन्द्र में उपभोक्तावाद है, बहुराष्ट्रीय पूँजी की चौधराहट है, एवं सांस्कृतिक अवमूल्यन है परिणामस्वरूप सहज, सरल मानवीय जीवन लगातार जटिलताओं और विद्रुपताओं का शिकार हो रहा है।

भूमण्डलीकरण के मानवीय जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण इसे लाक्षणिक शब्दों में निम्न प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता हैं–''विज्ञान का ध्वसांत्मक और तकनीकी क्रांति का अमानवीय रूप, बेशुमार दौलत की अनियंत्रित लिप्सा और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बहुरूपी खेल, लोकतंत्र में लूटेरों का वर्चस्व, हिंसा, अशिक्षा, गरीबी, अशांति और शोषण।''

इन भयानक परिस्थितियों ने सम्पूर्ण मानव जीवन के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। ऐसे में आज एकमात्र गांधी के विचारों में ही उम्मीद की किरण नजर आती है। गांधी 'स्वप्नजीवी' नहीं 'व्यावहारिक' 'आदर्शवादी' थे। स्वराज, स्वदेशी एवं सत्य ऐसे तीन महत्वपूर्ण आदर्श थे जिनकों उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन में साकार रूप दिया। गांधी की दृष्टि में स्वदेशी एक वैकल्पिक अवधारणा मात्र नहीं है बल्कि प्रकृति और मनुष्य के अद्भुत सामंजस्य का एकमात्र जीवन दर्शन है। स्वदेशी न सिर्फ आर्थिक जीवन शैली के समस्त अवयव यथा उत्पादन, विपणन, तकनीकी, बाजार, पर्यावरण आदि के स्थानिक प्रश्नों के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों का समाधान करने का भी सामर्थ्य रखती है।

अतः वर्तमान संकटमय परिस्थितियों में गांधीय दृष्टि की प्रमुख अवधारणा स्वदेशी अभी भी एक दीपस्तम्भ है जो विश्व को रचनात्मक विकल्प की दिशा में अग्रसर होने का अवसर देती है। इस तथ्य की संतुष्टि के लिए स्वदेशी से सम्बन्धित गांधी के विचारों का वर्तमान संदर्भ में अध्ययन करना समीचीन है।

भूमण्डलीकरण का विकल्पः– स्वदेशी और गांधीवादी जीवन मूल्य

भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप उत्पन्न तकनीकी और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विरूद्ध गांधी की स्वदेशी अवधारणा ऐंद्रिकता पर आधारित सभ्यता का एक विकल्प प्रतीत होती है। गांधी की स्वदेशी धारणा आर्थिक आजादी और आत्मिनिर्भरता का दूसरा नाम तो है ही, साथ ही अध्यात्म की दृष्टि से भी यह गांधी चिंतन का मौलिक विचार है।

स्वदेशी को स्पष्ट करते हुए गांधी कहते हैं ''मेरा यह विचार कभी भी नहीं रहा है कि स्वदेशी का यह अर्थ लिया जाए कि विदेश में बनी हर चीज को हर हालत में त्याज्य समझना है। स्वदेशी की मोटी परिभाषा यह है कि हमें देशी उद्योगों को संरक्षण प्रदान करने के लिए विदेशी वस्तुओं का त्याग करके देशी वस्तुओं का इस्तेमाल करना चाहिए। यह बात उन उद्योगों पर खास तौर से लागू होती है जिनके नष्ट होने पर भारत कंगाल हो जायेगा।[3]

गांधी का यह विचार भारत के परम्परागत लघु एवं कुटीर उद्योग धंधों के आर्थिक स्वावलम्बन पर जोर देता है एवं वृहत औद्योगिक तंत्र का विरोध करता है। क्योंकि गांधी की दृष्टि में उद्योगवाद में केन्द्रीकरण, शोषण एवं हिंसा निहित है। अतः उन्होंने इसका डटकर विरोध किया और विकेन्द्रीकरण को उजागर किया। लघु इकाइयों के स्वावलम्बन में ही विकेन्द्रीकरण निहित है। जब उत्पादन एवं उपभोग अधिकाधिक स्थानीय होने लगेंगे तो हमारी समृद्धि भी बढ़ेगी।

वर्तमान समय में भारत सरकार द्वार सिंगल ब्रांड रिटेल क्षेत्र में 100 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को मंजूरी दिये जाने से भारतीय लघु उद्योगों पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में गांधी का यह विचार उपयुक्त प्रतीत होता है। इस सम्बन्ध में यह भी स्मरण रहे कि सिंगल ब्रांड रिटेल क्षेत्र में 51 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को पहले ही अनुमति प्राप्त है। भारत सरकार के इस फैसले से देश में एडिडास, नाइके, लुइस विटन, एललार्डो आदि के साथ–साथ अन्य बड़े ग्लोबल ब्राण्डों के विदेशी कम्पनियों के स्टोर भारत में खुलने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। वहीं देशी खुदरा बाजार के कारोबारियों के व्यवसाय पर संकट के बादल छाने की आशंका है क्योंकि देश के छोटे रिटेलर (खुदरा व्यापारी) विदेशी रिटेल श्रृंखलाओं के उत्पादों का मुकाबला नहीं कर पायेंगे। जिससे उनके कारोबार बंद होंगे या उस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त एक बात और कि भारतीय लघु उद्योग श्रम आधारित है अतः यदि ऐसा निर्णय लागू होगा तो भारत में असंख्य लोग अर्द्धबेरोजगार तथा बेरोजगार हो जायेंगे। यदि हम भारत में व्याप्त बेरोजगारी और अर्द्धबेरोजगारी की उपेक्षा करके विदेश में निर्मित और वहीं से आयातित वस्तुओं का व्यवहार करने लगेंगे तो इससे तो हम अपने देश के दुःख और दरिद्रता को बढ़ाने में ही योगदान देंगे।

वस्तुतः प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का विचार नवउपनिवेशवाद की ओर ले जाने वाला मार्ग है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की दृष्टि से भारत की बाजार संभावनाएं, सस्ता श्रम, सस्ता कच्चा माल प्रमुख आकर्षण प्रेरक है जिनके प्रभाव से बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बाढ़ ही आ जाएंगी जिसका परिणाम होगा, देश एक बार फिर गुलामी की जंजीरों में जकड़ जाएगा। इतिहास इस बात का प्रमाण है। आज से 200 वर्षों पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार के उद्देश्य से आई थी परन्तु धीरे–धीरे उसने न केवल भारत के कुटीर उद्योग धंधों का नाश किया अपितु भारत के आत्मनिर्भर गांवों को भी बर्बाद कर दिया। प्रसिद्ध अर्थवेत्ता,

साम्राज्यवाद के कटू आलोचक व भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रदूत दादाभाई नौरोजी ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासनकाल का विश्लेषण करते हुए ''पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया'' नामक कृति में आर्थिक निकासी के सिद्धान्त की रचना की थी जो कि आदिम भूमण्डलीकृत युग में भारत को अधिक गरीब बनाता है। महादेव गोविन्द रानाडे ने आर्थिक राष्ट्रवाद की अवधारणा दी जिसके अन्तर्गत राष्ट्र का समग्र विकास महत्वपूर्ण है लेकिन समग्र विकास तभी संभव है जब राष्ट्र आर्थिक रूप से निर्भर हो।

भारत के लघु एवं कुटीर उद्योग धंधों के समर्थन द्वारा गांधी यह चाहते थे कि गांव पूर्णतः स्वावलम्बी हो और सहयोग के आधार पर कार्य करें। जिससे गुलामी की जो स्थिति उत्पन्न हुई है उसे त्यागा जा सके। स्वयं गांधी के शब्दों में ''प्रत्येक को संतुलित भोजन, रहने को अच्छा मकान, बच्चों की शिक्षा की सुविधाएँ और दवादारू की काफी मदद मिलनी चाहिए।'' यह मेरा आर्थिक समानता का चित्र है। मैं प्रारंभिक आवश्यकताओं के अलावा और सभी बातों का निषेध नहीं करता मगर उनका नम्बर तभी आता है, जब पहले गरीबों की मौलिक आवश्यकताऐं पूरी हो जायें।''[4]

यहां गांधी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऐसे उद्योगों की स्थापना के पक्ष में थे जो स्थानीय संसाधनों पर आधारित हो एवं जिनकी वृत्ति ग्रामीण हो। जिससे आन्तरिक एवं नैतिक शक्ति का विकास हो तथा कार्य करने वाले सहयोगियों के मन में विश्वास तथा आस्था उत्पन्न होती हो। स्वदेशी के अन्तर्गत खादी, खाद, चमड़े के उद्योग, आरोग्य, कम्पोस्ट, आदि प्रमुख रूप से शामिल उद्योग है। गांधी इन्हीं रचनात्मक उद्योगों से पूर्णतः चाहते थे कि ग्राम दृष्टि का विकास हो, जिससे हम आर्थिक समानता प्राप्त कर सकें। इसलिये गांधी ने चरखे एवं खादी को स्वदेशी को केन्द्र बिन्दु माना था। खादी उनके लिए शांतिपूर्ण अहिंसा का प्रतीक तथा परिश्रमशीलता, शारीरिक श्रम, अशोषण और आत्माभिव्यक्ति की सूचक थी।[5] वहीं मुक्त उद्यम के अन्तर्गत बड़े पैमाने पर उत्पादन, यंत्रों द्वारा होने वाले शोषण, धन तथा सत्ता के केन्द्रीकरण को रोकने के लिए उन्होंने चरखे के आंदोलन को एक संगठित प्रयास बताया।[6] इससे व्यक्ति जहां स्वावलम्बी बनेगा वहां सादगी, अहिंसात्मक जीवन तथा गरीब और अमीर, पूँजी और श्रम, राजा और किसान के बीच अविच्छेद सम्बन्ध स्थापित होगा।[7] गांधी के लिये खादी और चरखा आर्थिक समानता लाने तथा यूरोपीय सभ्यता पर रोक लगाने का एक साधन था, उन्होंने इसे एक राष्ट्रीय कर्त्तव्य माना।[8]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गांधी ने स्वदेशी की केन्द्रीय इकाई गांव को ही माना था। इनको विकसित करने के लिए वे ग्रामदृष्टि के विकास के समर्थक थे। उनका मानना था कि इसी ग्राम दृष्टि से शोषण व हिंसा का मुकाबला किया जा सकता है। क्योंकि इसमें उत्पादन का आधार शारीरिक श्रम है। उन्होंने स्पष्ट किया था, ''इन उद्योग धंधों में शरीर श्रम मुख्य चीज थी।'' विशाल यंत्रोद्योग उस समय नहीं थे। क्योंकि जब मनुष्य हाथ से जोत सके, उतनी ही जमीन से संतोष मानता हो, तब वह दूसरे का शोषण नहीं कर सकता। हाथ के उद्योग में शोषण और गुलामी की गुजांइश ही नहीं है।''[9]

गांधी का मानना था कि उत्पादन की शैली श्रम आधारित होगी तो इससे बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न होंगे तथा श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अतः प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम करना अनिवार्य होगा जिसे गांधीय दृष्टि से 'ब्रेड लेबर' थ्योरी कहा जाता है।

अतः गांधी के चिंतन में स्वदेशी का विचार आर्थिक दृष्टि के साथ–साथ अध्यात्म से भी जुड़ा हुआ है। गांधी की दृष्टि सनातन परंपरा से संगत है। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में जीवन को चार आश्रमों में विभक्त किया गया है। हर आश्रम में श्रम का महत्व है। श्रम उस आश्रम का स्वधर्म है। ब्रह्मचर्य आश्रम से आरंभ होकर संन्यास आश्रम तक श्रम से मुक्ति नहीं है। अतः श्रम आध्यात्मिक लक्ष्य अर्थात् मोक्ष प्राप्ति का एक साधन है। इस रूप में गांधी स्वदेशी को मानव जीवन के धर्म के रूप में महत्व देते हैं। यहां धर्म से गांधी का आशय मानवता की सेवा से था। स्वयं गांधी के शब्दों में, ''मेरे पास इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण तो नहीं है, परन्तु मैंने हमेशा यहीं माना है कि भारतवर्ष में एक समय गांवों का अर्थतंत्र ऐसे निर्दोष आहिंसक उद्योग धंधों पर रचा गया था। वह मनुष्य के अधिकारों पर नहीं, बल्कि मनुष्य के धर्मों और फर्जों पर खड़ा था। ऐसे धंधों में लगे हुए लोग अपनी जीविका तो कमाते ही थे। इससे आगे बढ़कर उनके परिश्रम से सारे समाज का हित और कल्याण होता था।''[10] यही कारण था कि स्वदेशी को गांधी ने अपने एकादश व्रतों में सम्मिलित किया था और इसे 'महाव्रत' की संज्ञा दी थी।

वास्तव में स्वदेशी के संदर्भ में स्वदेशी के संदर्भ में गांधी की मुख्य दृष्टि उपयोग व सेवा की है। इसका अभिप्राय यह है कि जिन वस्तुओं का हम उपभोग कर रहे हैं, उनके प्रतिदान के रूप में हमें सेवा भी करनी आवश्यक है। जो वस्तुयें हम प्रकृति से प्राप्त करते हैं, उनकी एवज में हम प्रकृति को क्या दे रहे हैं और जो वस्तुयें हमें समाज से प्राप्त होती है, उनकी एवज में हम समाज को क्या दे रहे हैं– यह चिन्तन स्वदेशी का अवयव है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि गांधी जिसे उपयोग व सेवा का दर्शन कहते थे, उसका अभिप्राय प्रकृति और पर्यावरण के साथ दोस्ताना रिश्ता कायम करना था। इसके लिए यह

आवश्यक है कि उत्पादन प्रक्रिया प्रकृति के दोहन पर आधारित न हो। महात्मा गाँधी का यह सिद्धान्त वाक्य कि ''यह पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है लेकिन मनुष्य के लोभ को नहीं।'' में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि उत्पादन का उद्देश्य अधिकतम उत्पादन करना है तो निश्चय ही वह प्रकृति के अन्धाधुंध दोहन पर आधारित होगा, जिसके परिणामस्वरूप नैसर्गिक संसाधन, जो कि अपरिमित नहीं है, समाप्त होते चले जाऐंगे और पर्यावरण संकट का ऐसा दौर शुरू हो जायेगा, जिससे मनुष्य जीवन ही खतरे में पड़ जाएगा। अतः गांधी दर्शन में मनुष्य की भौतिक जरूरतों को लेकर मर्यादा की बात कहीं गई है लेकिन वर्तमान समय में हम विकास की चकाचौंध में प्रकृति की अनदेखी कर रहे हैं– उदाहरण के लिए आधुनिक राज्य अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए नाभिकीय संयत्र की स्थापना करने में लगे हैं परन्तु इनसे निकलने वाले रेडियशन से प्रकृति को होने वाले नुकसान को अनदेखा करने का परिणाम भी इन्हीं को झेलना पड़ता है। सन् 2011 में जापान में सूनामी ने जो तबाही मचाई उसके नाभिकीय संयत्र से निकलने वाले रेडियेशन ने भी आग में घी का काम किया। वर्ष 2020 मे कोविड–19 ने जो विष्व में जो कहर भरपाया है यह मानवता के लिए एक अति खतरे की चेतावनी है। स्पष्ट है कि भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप अपनाई गई उत्पादन की अधिकतम तकनीक व जीवन शैली के कारण मानव प्रकृति के साथ भी क्रुरतम व्यवहार करता है। इस जीवन शैली से होने वाले खतरों को पहचानने में गांधीजी ने अपनी दूरदृष्टि का परिचय काफी पहले ही अपनी कृति 'हिन्द स्वराज' में दे दिया था।

गांधी की खास बात यह थी कि वे पूंजीवाद के विकास को एक पूर्व निर्धारित दिशा में बढ़ते हुए देखते थे। उनकी मान्यता थी कि एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में भूमण्डलीकरण आधुनिकता के जन्म के समय भी मौजुद था। 'हिन्द स्वराज' में दर्ज आधुनिकता की अपनी विख्यात आलोचना में गांधी ने इतिहास के पूँजीवादी अग्रगमन की एक भविष्य दृष्टि पेश की थी। गांधी की वे बातें एकदम सही साबित हुई हैं। गांधी ने बड़े मौलिक ढ़ंग से कहा कि उपभोक्तावाद के धुआँधार प्रसार के मर्म में दरअसल अतिचार की प्रवृत्ति है। उपभोक्तावाद अपने ही पूर्वरूपों को खाकर विकसित होता है। कामनाएँ और मशीने इस कदर बढती चली जाती है कि जीवन के अमूर्त और ठोस रूप उनके दैत्याकार जबड़े में समा जाते हैं कामना मन की एक स्थिति बन जाती है और अपनी भूख मिटाने के लिए मशीनों को जन्म देती हैं।

यहां पर गांधी 'इच्छाओं और मशीनों के बढ़ते चले जाने' वाले वाक्य पर अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं एवं इसके निदान हेतु मर्यादित जीवन दृष्टि को अपनाने का आग्रह अपने स्वदेशी सिद्धान्त के अन्तर्गत करते हैं। भारत में अपने मित्र को लिखे एक पत्र में गांधी ने 'हिन्द स्वराज' का जो सारांश प्रस्तुत किया उनमें से इन्हीं दो बातों पर अधिक ध्यान दिया गया है[11]–

1. भौतिक सुख सुविधा में बढ़ोतरी किसी भी रूप में भौतिकता को प्रेरित या समृद्ध नहीं करेंगी।
2. सादा जीवन और उच्च विचार ही शांति और समरसता को कूँजी है।

उपरोक्त संपूर्ण विवेचन से गांधी के स्वदेशी सिद्धान्त के निम्नलिखित निहितार्थ निकाले जा सकते हैं:–

1. गांव सशक्तिकरण ही विकास का आधार है।
2. श्रम करने की सामर्थ्य रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयुक्त रोजगार।
3. प्रकृति के अनुचित दोहन पर रोक।
4. इच्छाओं को मर्यादित करने से ही नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान संभव।

स्वदेशी बनाम भूमण्डलीकरण

भारतीय दर्शन में भूमण्डलीकरण के समान ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विचार को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसके अन्तर्गत समस्त विश्व को एक कुटुम्ब माना है तथा समूचे विश्व के विकास एवं उन्नति की कामना की गई है। स्वदेशी विचार भी इसी भावना को व्यक्त करता है। यद्यपि ये स्थानीयता का प्रेरक है परन्तु अंततः इसका उद्देश्य भी भावी विश्व समाज का निर्माण करना ही है। अतः भूमण्डलीकरण से इसका कोई विरोध नहीं होना चाहिए परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है। दोनों अवधारणाओं में निम्नलिखित भिन्नता दृष्टव्य है:–

1. स्वदेशी में उत्पादन की मुख्य शैली शरीर श्रम को माना जाता है। इस उत्पादन शैली में प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना आवश्यक है। अतः विकेन्द्रित और सभी बालिग लोगो को उत्पादन प्रक्रिया में शामिल करने से निम्न लाभ होते हैं 1. बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न होते हैं तथा श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ती है। 2. उत्पादन प्रक्रिया में शामिल लोगों के मध्य आर्थिक व सामाजिक सम्बन्ध विकसित होते हैं, उनमें शोषण का तत्व कम होता चला जाता है। 3. उत्पादन के साधनों की सामूहिक स्वामित्व की अवधारणा विकसित होती है, जिसके साथ–साथ वितरण और उपभोग की अहिंसक प्रक्रिया विकसित होती है।

भूमण्डलीकरण में उत्पादन की मुख्य शैली तकनीक को माना जाता है। उत्पादन की इस व्यवस्था को श्रमिकों के एवज में मशीनों की प्राधान्यता बढ़ जाती है जिससे श्रमिक बेकार हो जाते हैं। इसके कारण श्रम बाजार में रोजगार की कोई संभावना नहीं रहती। इसके अतिरिक्त, मशीनों से अधिक मात्रा में होने वाले उत्पादन को खपाने की समस्या पैदा हो जाती है।

2. स्वदेशी में आवश्यकतानुसार उत्पादन करने पर बल दिया गया है। यह उत्पादन व उपभोग में सीधा रिश्ता स्थापित करती है। इस आधार पर यह मनुष्य के लोभ पर नियंत्रण लगाती है।

   भूमण्डलीकरण में उत्पादन उपभोक्ताओं के अनुसार करने पर बल दिया जाता है। अर्थात् उत्पादन बुनियादी जरूरतों को ही पूरा करने के लिए नहीं अपितु नयी जरूरतों को पैदा करने के लिए किया जाता है जिससे अधिकाधिक मुनाफा कमाया जा सके। इसमें विज्ञापनों के जरिये नयी–नयी वस्तुओं के प्रति उपभोक्ता में रूचि पैदा की जाती है। जरूरतों को असीमित करने पर बाजार के पास यानि उत्पादकों के पास एक मौका इस तरह का मिलता है कि वे नयी जरूरतों पैदा करते हैं। एक वस्तु तैयार हो तो उसी के अनेक रूप जो मूलतः उसी गुण धर्म वाले हो, परन्तु उसकी रूप सज्जा बदल कर फिर पेश किया जाता है या छोटी मोटी उपयोगिता को जोड़कर उसे आधुनिकता का नाम देकर फिर बेचा जाता है। आजकल 'बायबेक' की योजना के नाम पर साल दो साल पुरानी वस्तु को वापस खरीद कर नई वस्तु पेश की जाती है।

3. स्वदेशी लघुता में सौंदर्य की खोज है। इसमें छोटी इकाइयों के आर्थिक स्वावलम्बन पर इसलिए जोर दिया जाता है कि बिना स्वालम्बन की मिट्टी के शोषण से हम उन्हें बचा नहीं सकते। शोषण ही विषमता और अन्याय की जननी है।

   जबकि भूमण्डलीकरण विशाल तकनीक, विशाल कारखानों एवं विशाल उत्पादन पर बल देने के कारण केन्द्रीकरण का पोषक है जिससे शोषण और अन्याय में वृद्धि होती है।

4. स्वदेशी उदात्त देशभक्ति से निकला हुआ विचार है। इसका सम्बन्ध राष्ट्रप्रेम की प्रखर भावना और आत्मनिर्भरता से है। एक व्यापक आधार वाली यह धारणा राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने में समाहित किये हुये हैं। कुछ लोग अन्तर्राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व के नाम पर 'स्वदेशी' को अत्यन्त स्वार्थपूर्ण सिद्धान्त भी कह देते हैं। उनके अनुसार यह युग असभ्यता के युग की ओर लौटने के बराबर है। लेकिन जो यह कहते हैं वे भूल जाते हैं–''जब मैं अपने कुटुम्ब की सेवा करने में भी समर्थ नहीं हूँ, तब सारे भारत की सेवा करने पर कमर कसने का विचार धृष्टता है।'' अतः स्वदेशी अहिंसा व प्रेम के आचरण की कुंजी है। घृणा पर आधारित देशभक्ति ''मारक'' है तथा प्रेम पर आधारित देशभक्ति 'तारक' है। अतः स्वदेशी संकुचित एवं आक्रामक राष्ट्रवाद का पर्याय नहीं है अपितु स्वास्थ्य विश्व सम्बन्ध का प्रतीक है।

   इसके विपरित भूमण्डलीकरण पड़ौसी की उपेक्षा कर स्वार्थपूर्ति पर बल देता है अतः यह स्वदेश प्रेम में बाधक है। यह राष्ट्रों को आत्मनिर्भरता की प्रेरणा देता है, अर्न्तनिर्भरता की नहीं। अतः यह संकीर्ण राष्ट्रीयता के विकास में सहायक है। यह प्रक्रिया अधिकाधिक उत्पादन को खपाने के लिए बाजारों की खोज करती है जिससे उपनिवेशवाद को बल मिलता है। एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्रों पर प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयास में विश्व में शोषण और हिंसा को बढ़ाता है जो अन्तर्राष्ट्रवाद में बाधक है।

5. स्वदेशी प्रकृति रक्षक है। इसमें मानवीय आवश्यकतओं को सीमित करने का आग्रह है जिससे प्रकृति का अनुचित दोहन न हो। इसमें चूंकि उत्पादन का उद्देश्य अधिकतम उत्पादन करना नहीं होता अपितु सीमित जरूरतों का उत्पादन स्थानिक स्तर पर करने का प्रयास किया जाता है। जब उत्पादन और उपभोग दोनों किसी सीमित क्षेत्र में होते हैं तो उत्पादन को अनिश्चित हद तक और किसी भी मूल्य तक बढ़ाने का लोभ नहीं रह जाता है।

   परन्तु भूमण्डलीकरण प्रकृति भक्षक है। इसमें मशीन व तकनीक का प्रयोग करके जो उत्पादन व्यवस्था बनाई जाती है, उससे प्राकृतिक संसाधनों का अपार नुकसान होता है। जंगल, जमीन और जल इन तीनों संसाधनों का मात्र दोहन, शोषण ही नहीं होता अपितु बड़े पैमाने पर प्रदूषण भी होता है।

   इसका एक उदाहरण ले– नई तकनीक, उत्पादन व्यवस्था के अन्तर्गत उद्योग के क्षेत्र में ऊर्जा का सघन प्रयोग कर, जो उत्पादन करती है उससे बड़ी मात्रा में कार्बन डाई ऑक्साईड ($ब्व_2$) गैस पैदा होती है जो जलवायु पर प्रतिकूल असर डालती है जिसका परिणाम आज मानव समाज भुगत रहा है। अतः प्रकृति दोहन से प्राकृतिक संसाधनों के विलुप्त होने के साथ–साथ पर्यावरण संकट पैदा होने का भी खतरा स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

6. स्वदेशी नैतिकता पर आधारित जीवन शैली का निर्माण करती है। इस प्रकार की जीवन शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि जीवन में कुछ भी कृत्रिम या बनावटी नहीं होता। यह जीवन में ''सादा जीवन उच्च विचार'' को अपनाने की प्रेरणा देती है। स्वदेशी शोषण रहित अहिंसक भावना पर आधारित है जिसमें समाज का सक्रिय वर्ग अपनी कार्यक्षमता के अनुरूप संलग्न होता है इससे न सिर्फ सामाजिक मूल्य के रूप में श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ती है। बल्कि समाज के असक्षम समूह को भी सामाजिक सुरक्षा की गारण्टी प्राप्त होती है। परिणामतः सादगी और सेवाभाव जो कि सहज मानवीय गुण है, वह लगातार विकसित होता जाता है।

भूमण्डलीकरण भौतिकवादी जीवन शैली है जो उपभोगवादी जीवन पर बल देती है। इसमें समाज के कमजोर तबकों की उपेक्षा की जाती है क्योंकि यह डार्विन के योग्यतम की जीविका सिद्धान्त में विश्वास करती है। अतः यह धारणा अन्य लोगों के कल्याण की अपेक्षा स्वयं के कल्याण का ही प्रयास करती है।

स्वदेशी एवं भूमण्डलीकरण के संदर्भ में उपरोक्त विश्लेषण के तहत कहा जा सकता है कि दोनों अवधारणाओं में दो ध्रुवों का अन्तर है। स्वदेशी जरूरतों पर आधारित और भूमण्डलीकरण लोभ, लालच पर आधारित है। अतः जरूरतें कितनी भी हो, उनकी अंतिम मर्यादा हो सकती है लेकिन लालच, लोभ तो अमर्यादा है। अतः भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया निरन्तर गतिमान रहती है एवं विभिन्न रूपों में मानव जीवन में प्रकट होती रहती है। एक समय में सैनिक सत्ता के अधीन उपनिवेश बनाये जाते थे। फिर व्यापार के माध्यम से उपनिवेशवाद को सुदृढ़ किया गया। आज नये उपनिवेशवाद को जागतिक आयाम दिया गया है ताकि यह पता नहीं चले कि कोई देश विशेष का साम्राज्य विस्तार हो रहा है।

भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध में स्वदेशी का प्रयोग इतिहास में होता रहा है। स्वदेशी को बहिष्कार के रूप में विश्व की प्रमुख स्वाधीनता क्रान्तियों में आजमाया गया है, चाहे वह अमरीका का स्वाधीनता संग्राम हो, जर्मनी व जापान का नवनिर्माण या चीन की क्रान्ति। बहिष्कार का शाब्दिक अर्थ है– ''विदेशी वस्तुओं के प्रयोग को अस्वीकार करना।'' यह अस्वीरोक्ति मात्र एक नैतिक कदम नहीं है बल्कि उस मानसिकता का भी परित्याग है, जो विदेशी वस्तुओं के सेवन की श्रेष्ठता के साथ सम्बद्ध है।

भारतीय संदर्भ में स्वदेशी को चर्चित बनाने में गांधी का विशेष योगदान है। स्वाधीनता आंदोलन में गांधी ने न सिर्फ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन खड़ा किया था बल्कि जीवन के एक आवश्यक अवयव के रूप में स्वदेशी को रचनात्मक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन और असहयोग आंदोलन में स्वदेशी को समाहित किया था। स्वदेशी को गांधी नैतिक शक्ति को प्राप्त करने का एक जरिया मानते थे। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि इस प्रकार के आंदोलन में नैतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए गुलामी की मानसिकता का परित्याग करना आवश्यक है। सन् 1920 में असहयोग आंदोलन की पूर्व संध्या पर गांधी ने पटेल में उमर सोबानी की मिल के मैदान में विलायती कपड़ों की होली जलाते हुए कहा था, ''मैं इस दिन को बम्बई के लिए एक पवित्र दिन मानता हूँ।'' आज हम अपने शरीर से गंदगी हटा रहे हैं। हम विदेशी वस्त्र को, जो हमारी गुलामी के चिन्ह है, त्यागकर अपना शुद्धिकरण कर रहे हैं। आज हम स्वतंत्रता (स्वराज) के मंदिर में प्रवेश पाने की योग्यता प्राप्त कर रहे हैं। वे अंग्रेज, अमेरिकन, जापानी और फ्रांसिस) हमारे यहां अपना कपड़ा तक तक भेजते रहेंगे, जब तक हम खरीदना पसंद करेंगे। जब हम विदेशी सुंदर चीजों पर लुब्ध होना बंद कर देंगे, तब हम विदेशी राष्ट्रों के प्रति दुर्भाव भी रखना छोड़ देंगे।''[12]

स्वदेशी की भावना के अनुरूप गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन में कुछ रचनात्मक आंदोलन भी प्रारंभ किये थे। जिसमें खादी और ग्रामोधोग, कुटीर उद्योगों का विस्तार, आरोग्य आंदोलन आदि प्रमुख रूप में शामिल है।

संक्षेप में कहां जाये तो स्वदेशी गांधी के स्वराज प्राप्ति का महत्वपूर्ण पहलू था। गांधी का स्वराज नीचे से शुरू होने वाली अवधारणा हैं, जिसकी बुनियाद सत्य और अहिंसा है तथा स्वदेशी, स्वराज जिसकी संरचनात्मक अवधारणा है।[13]

उपर्युक्त आंकलन से स्पष्ट है कि स्वदेशी के सम्बन्ध में गांधीय दृष्टि का आधार काफी विस्तृत है, जो स्वदेशी की अवधारणा को व्यापक रूप से नैतिकतापूर्ण जीवन शैली और विकास के वैकल्पिक मॉडल के रूप में स्थापित करने के लिए आवश्यक आधार है। यद्यपि गांधीय युग के सामने सभ्यता व संस्कृति के निवर्तमान संकटों का गहरापन नहीं था, परन्तु उनकी दृष्टि में यह संकट वर्तमान सभ्यता का अन्तः निहित संरचनात्मक दोष है, जिसकी बुनियाद में शोषण एवं हिंसा है। निश्चय ही इससे मुक्ति का तरिका तो गांधी के स्वदेशी दर्शन में ही है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य स्वदेशी के महत्व को पुनः उजागर करना है एवं भूमण्डलीकरण के नकारात्मक प्रभावों से मानवीय जीवन की रक्षा करना है क्योंकि सत्य को जितनी बार दुहरा सकें, दुहराते रहना चाहिये, शायद उसका प्रभाव दूरगामी सिद्ध हो जायें।

संदर्भ

शिव विश्वनाथन, 'दि प्रॉब्लम', सेमिनार : ग्लोबलाइजेशन पर विशेषांक, सं. शिव विश्वनाथन, नयी दिल्ली, 2001, पेज 503

अभय कुमार दुबे, 'भारत का भूमण्डलीकरण' ,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007 , पृ. 38

प्रभात कुमार भट्टाचार्य, 'गांधी दर्शन', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1972–73, पृ 143

गांधी– हरिजन सवक 29.08.26

गांधी यंग इण्डिया, मई 1925

उपर्युक्त सितम्बर, 1925

जे.बी. कृपलानी : गांधी, द स्टेट्समैन, देहली, रनजीत, 1951, पृ. 95

एम.एन. अग्रवाल : प्रिंसीपल्स ऑफ गांधीयन प्लान, इलाहाबाद, किताब महल, 1960, पृ. 35

गांधी – हरिजन 29.08.36

गांधी – हरिजन 01.09.40

मनोज सिन्हा, गांधी अध्ययन, ओरियंट लांग्मैन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 44

उपाध्याय– बापू कथा – नव जीवन अहमदाबाद, 1969, पृ. 33

आशा कौशिक, 'गांधी नयी सदी के लिए', रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2000, पृ. 155